RNI No. 26281/74 रजि. नं. पी.बी./जे.एल–011/2018-20

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम
साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख पत्र

वर्ष: 45, अंक : 49 एक प्रति 2 : रुपये
कुल पृष्ठ : 8
रविवार 8 मार्च, 2020
विक्रमी सम्वत् 2076, सृष्टि सम्वत् 1960853120
दयानन्दाब्द : 196 वार्षिक शुल्क : 100 रुपये
आजीवन शुल्क : 1000 रुपये
दूरभाष : 0181-2292926, 5062726
E-mail: apspunjab2010@gmail.com,
www.aryapratinidhisabha.org

POSTAGE PAID
MAIL BOOKING CENTRE
09 MAR 2020

वर्ष–45, अंक : 49, 5-8 मार्च 2020 तदनुसार 25 फाल्गुन, सम्वत् 2076 मूल्य 2 रु०, वार्षिक 100 रु० आजीवन 1000 रु०

प्रभु के अनेक नाम

ले०-स्वामी वेदानन्द (दयानन्द) तीर्थ

तदेवाग्निस्तदादित्यस्तद्वायुस्तदु चन्द्रमाः।
तदेव शुक्रं तद् ब्रह्म ताऽआपः स प्रजापतिः।।
-यजुः० ३२।१

शब्दार्थ-तत्+एव= वही **अग्निः=** अग्नि, **तत्=** वही **आदित्यः=** आदित्य **तत्=** वही **वायुः=** वायु, **तत्+उ=** वही **चन्द्रमाः=** चन्द्रमा है। **तत्+एव=** वही **शुक्रम्=** शुक्र **तत्=** वही **ब्रह्म=** ब्रह्म, **ताः=** वही **आपः=** आपः और **सः=** वही **प्रजापतिः=** प्रजापति है।

व्याख्या-भगवान् को वेद में **पुरुणामनम्=** अनेक नामों वाला कहा गया है। इस मन्त्र में कुछ-एक नामों का उल्लेख है। इससे पूर्व यजुर्वेद के इकत्तीसवें अध्याय में भगवान् का पुरुष=व्यापक-रूप में वर्णन किया गया है। वहीं (३१।१९ में) उसे प्रजापति कहा गया है। इस मन्त्र के अन्त में **'स प्रजापतिः'** कहा गया है। इसका भाव यह निकला कि प्रजापति पुरुष ही अग्नि=अग्नि नाम वाला है, उसी का नाम आदित्य है, उसी को वायु और उसी को चन्द्रमा कहते हैं, शुक्र, ब्रह्म और आपः भी उसी के नाम हैं। भगवान् के अनन्त गुण-कर्म हैं, अतएव उसके नाम भी अनन्त हैं। जैसे एक मनुष्य किसी का पुत्र होने से पुत्र, भाई होने से भाई, पिता होने से पिता, जमाता होने से जमाता आदि नामों से पुकारा जाता है, ऐसे ही सबकी उन्नति करने वाला होने से वह अग्नि है, अखण्डनीय होने से वह आदित्य है। सबसे बलवान् और सबका गतिदाता होने से वह वायु है। सबके आह्लाद का कारण होने से वह चन्द्रमा है। शीघ्रकारी तथा शुद्धिकर्त्ता होने से वही शुक्र है। सबसे महान् होने के कारण वह ब्रह्म है। सर्वत्र व्याप्त होने के कारण वह 'आपः' है। सब प्रजाओं का पालक होने से वह प्रजापति है। इस प्रकार विचारने से प्रतीत होता है कि ये सब नाम अन्वर्थ हैं, लौकिक नामों की भाँति निरर्थक नहीं है। सत्यार्थप्रकाश प्रथम समुल्लास में लिखा भी है- ''तथा परमेश्वर का कोई भी नाम अनर्थक नहीं, जैसे लोक में दरिद्री के धनपति आदि नाम होते हैं। इससे यह सिद्ध हुआ कि कहीं गौणिक, कहीं कार्मिक और कहीं स्वाभाविक अर्थों के वाचक हैं।''

ऋग्वेद [१।१६४।४६] में परमेश्वर के अनेक नाम होने का स्पष्ट उल्लेख है-

इन्द्रं मित्रं वरुणमग्निमाहुरथो दिव्यः स सुपर्णो गरुत्मान्।
एकं सद्विप्रा बहुधा वदन्त्यग्निं यमं मातरिश्वानमाहुः।।

सर्वाग्रणी भगवान् को इन्द्र, मित्र और वरुण कहते हैं, वही दिव्य, सुपर्ण और गरुत्मान् है। उस अद्वितीय सत्यस्वरूप को विद्वान् बहुत प्रकार से कहते हैं। उसी को अग्नि, यम और मातरिश्वा कहते हैं।

सर्ववेदवित् मनुजी [१२।१२२-२३] भी यही कहते हैं-

प्रशासितारं सर्वेषामणीयांसमणोरपि।
रुक्माभं स्वप्नधीगम्यं विद्यात्तं पुरुषं परम्।।
एतमग्निं वदन्त्येके मनुमन्ये प्रजापतिम्।
इन्द्रमेके परे प्राणमरे ब्रह्म शाश्वतम्।।

सबको शिक्षा देने वाला, सूक्ष्म-से-सूक्ष्म, प्रकाशस्वरूप, समाधिस्थ बुद्धि से जानने योग्य परमेश्वर को परम पुरुष जानना चाहिए। उसे अग्नि कहते हैं, कई मनु और कई प्रजापति। कुछ लोग प्राण, कुछ इन्द्र और दूसरे उसे शाश्वत ब्रह्म कहते हैं।

भगवान् के अनेक नाम होने में कोई मतभेद नहीं। सभी मानते हैं कि भगवान् के अनेक नाम हैं। **(स्वाध्याय संदोह से साभार)**

यस्यायं विश्व आर्यो दासः शेवधिपा अरिः।
तिरश्चिदर्ये रुशमे पवी रवी तुभ्येत्सो अज्यते रयिः।।
-उ० ७.३.१३.१

भावार्थ-संसार में दो प्रकार के मनुष्य हैं, एक अनार्य अर्थात् अनाड़ी, वेद विरुद्ध सिद्धान्त को कहने और मानने वाले। दूसरे आर्य जो वेदानुसार सिद्धान्त को मानने वाले हैं। जो आर्य हैं वे वेदनिधि के रक्षक और प्रभु के सेवक भक्त हैं, वेदरूपी गुप्त महाधन को उपयोग में लाकर आर्य लोग सदा सुखी रहते हैं।

इन्द्रं वो विश्वतस्परि हवामहे जनेभ्यः। अस्माकमस्तु केवलः।।
-उ० ८.१.२.१

भावार्थ-हे चेतन स्वरूप प्रभो! आप परमैश्वर्य चेतन मात्र प्रभु की ही हम उपासना करते हैं। आपसे भिन्न किसी जड़ वा चेतन मनुष्य वा किसी प्राणी को अपना इष्टदेव और पूजनीय नहीं मानते, क्योंकि आप ही सब देवों के देव चेतनास्वरूप अधिपति हैं। आपकी ही उपासना से धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष ये चार पुरुषार्थ प्राप्त होते हैं, आपको छोड़ इधर-उधर भटकने से तो हमारा दुर्लभ यह मनुष्य देह व्यर्थ चला जायेगा, इसलिए हम सब, आपको ही अपना पूज्य और उपासनीय इष्टदेव जान आपकी उपासना और आपकी वेदोक्त आज्ञा पालने में मन को लगा कर मनुष्य देह को सफल करते हैं।

"शिवरात्रि पर मूलशंकर के बोध ने वेदोद्धार कर अविद्या को दूर किया

ले.-मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून

ऋषि दयानन्द ने देश-विदेश को एक नियम दिया है। अविद्या का नाश तथा विद्या की वृद्धि करनी चाहिये। इस नियम को संसार के सभी वैज्ञानिक एवं सभी विद्वान मानते हैं। आर्यसमाज में सभी विद्वान अनुभव करते हैं कि देश में प्रचलित सभी मत-मतान्तर इस नियम का पालन करते हुए दिखाई नहीं देते। इसी कारण से ऋषि दयानन्द को मत-मतान्तरों की अविद्यायुक्त मान्यताओं, सिद्धान्तों व परम्पराओं सहित सभी अन्धविश्वासों, पाखण्डों एवं आडम्बरों की समीक्षा करने सहित उनका खण्डन करना पड़ा। ऋषि के इन कार्यों का उद्देश्य विश्व के सभी मनुष्यों व भावी सन्ततियों का कल्याण करना था। ऋषि दयानन्द जी को इस कार्य की प्रेरणा अपने विद्या गुरु स्वामी विरजानन्द सरस्वती से सन् 1863 में गुरु-दक्षिणा के अवसर पर उनसे विदा लेते समय मिली थी। इस कार्य को उन्होंने वेद प्रचार का नाम दिया। वेद प्रचार का अर्थ सत्य, न्याय तथा विद्यायुक्त मान्यताओं व सिद्धान्तों का प्रचार करना है। ऋषि दयानन्द के समय में संसार के लोग वेद व उसके महत्व को भूल चुके थे। ऋषि ने अपने गुरु के सान्निध्य में वेदों का महत्व जाना था और वेदों को प्राप्त कर उनकी परीक्षा करने के बाद वह इस निष्कर्ष पर पहुंचे थे कि वेद ईश्वरीय ज्ञान है और इसकी सभी बातें सत्य व स्वत: प्रमाण कोटि की है। वेद ही मनुष्य जाति का सर्वविध व सर्वांगीण कल्याण करने वाला दिव्य व अलौकिक ज्ञान भी है। सूर्य के अस्तित्व को सिद्ध करने के लिये किसी प्रमाण की आवश्यकता नहीं होती, वह अपना प्रमाण स्वयं उदय होकर अपने प्रकाश व उष्णता से देता है। जिसको सूर्य का प्रमाण चाहिये उसकी आंख व त्वचा इन्द्रिय ठीक होनी चाहिये जिससे वह वस्तुओं को देख सकता व उनका अनुभव कर सकता हो। मनुष्य अपनी आंखों से सूर्य को देख कर उसका प्रत्यक्ष अनुभव व ज्ञान प्राप्त कर सकता है।

इसी प्रकार वेद ईश्वर प्रदत्त ज्ञान होने एवं संसार के नियम व व्यवस्थायें वेदों के अनुरूप होने से यह सत्य व यथार्थ ज्ञान सिद्ध होता है। वेदों में ईश्वर, जीव व प्रकृति का यथार्थ ज्ञान प्राप्त होता है। वेद अपनी इस महत्ता के कारण स्वत: प्रमाण है। वेदों से इतर अन्य ऋषियों, विद्वानों तथा आचार्यों द्वारा कही बातें वेद के अनुकूल होने पर ही प्रमाणित व स्वीकार करने योग्य होती हैं। ऋषि दयानन्द ने वेदज्ञान की परीक्षा कर ज्ञान के सत्यासत्य होने की कसौटी 'वेद स्वत: प्रमाण एवं अन्य ग्रन्थ परत: प्रमाण' को प्रस्तुत कर मनुष्य जाति पर महान उपकार किया है। यह उनकी एक महत्वपूर्ण देन है जिससे समस्त मनुष्य जाति सृष्टि के अन्तिम समय तक ईश्वर, जीवात्मा, सामाजिक परम्पराओं एवं सभी विषयों के ज्ञान सहित ईश्वर की उपासना आदि का सत्य ज्ञान प्राप्त कर लाभान्वित होती रहेगी। आश्चर्य एवं दु:ख की बात है कि अज्ञान व किन्हीं अन्य कारणों से विश्व ने वेदों के महत्व व इनकी उपादेयता को उनके यथार्थ स्वरूप में अब तक स्वीकार नहीं किया है। हम विचार करते हैं तो हमें ईश्वर व उसका ज्ञान वेद मनुष्य जाति का सर्वस्व एवं प्राणों के समान महत्वपूर्ण प्रतीत होते हैं जिससे मनुष्य जीवन सुगमता से व्यतीत करते हुए परजन्म में भी उन्नति को प्राप्त किया जा सकता है। सम्पूर्ण मनुष्य जाति का कर्त्तव्य है कि वह वेदों की रक्षा करे और वेदाध्ययन कर अपने जीवन को उसके अनुकूल बनाकर धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष को प्राप्त करने में भी सफल होंवे।

ऋषि दयानन्द का जन्म गुजरात राज्य के मौरवी जिले के टंकारा नाम ग्राम में फाल्गुन कृष्ण पक्ष दशमी, वि. सम्वत् 1881 (12-2-1825) को एक औदीच्य ब्राह्मण परिवार में हुआ था। आयु के चौदहवें वर्ष में उन्होंने शिवरात्रि का व्रत किया था। पिता के साथ रात्रि जागरण करते हुए उन्होंने चूहों को शिवलिंग पर बिना किसी रोकटोक क्रीड़ा करते देखा था। इससे उन्हें बोध हुआ था कि वह मूर्ति सर्वशक्तिमान सच्चे शिव की मूर्ति नहीं है क्योंकि इसमें चूहों को अपने ऊपर से हटाने की शक्ति भी नहीं थी। बालक मूलशंकर (भावी ऋषि दयानन्द) के पिता व अन्य विद्वतजन भी उनकी शंका का समाधान नहीं कर सके थे। इस घटना के बाद से मूलशंकर ने मूर्तिपूजा करना छोड़ दिया था। कालान्तर में उनकी बहिन व चाचा की मृत्यु हुई। इस घटना ने उनके मन में मृत्यु का भय उत्पन्न किया। ऐसा प्रतीत होता है कि वह अपनी मृत्यु का अनुमान कर डरें होंगे। मृत्यु की ओषधि है या नहीं, इसका समाधान उन्हें अपने परिवारजनों व आचार्यों से नहीं मिला। अत: सच्चे ईश्वर व उसकी प्राप्ति के उपायों सहित मृत्यु पर विजय प्राप्ति के साधनों की खोज में वह अपनी आयु के बाईसवें वर्ष में घर छोड़कर चले गये। उन्होंने देश के प्राय: सभी प्रमुख तीर्थ स्थानों में जाकर वहां विद्वान संन्यासियों व महात्माओं का सान्निध्य प्राप्त किया और उनसे अपनी शंकाओं के समाधान जानने का प्रयत्न किया। उन्हें किसी से भी अपने प्रश्नों का सन्तोषजनक उत्तर प्राप्त नहीं हुआ। ऐसा करते हुए उन्होंने योग के आचार्यों से योग विद्या सीखी और उसमें निपुण हो गये। देश की दुर्दशा से वह चिन्तित रहते थे। उनकी यह पीड़ा उनके ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश व आर्याभिविनय आदि में भी प्रकट होती है।

योग में समाधि अवस्था को प्राप्त कर लेने पर भी ऋषि दयानन्द अपनी ज्ञान की पिपासा को सन्तुष्ट नहीं कर पाये। स्वामी पूर्णानन्द सरस्वती जी की संगति से उन्हें उनके शिष्य मथुरा के प्रज्ञाचक्षु दण्डी स्वामी विरजानन्द सरस्वती का परिचय मिला था जो वेद व आर्ष-ज्ञान के आचार्य थे। दण्डी जी मथुरा में अपनी पाठशाला में विद्यार्थियों को वेदांग व्याकरण अष्टाध्यायी-महाभाष्य पढ़ाते थे। स्वामी दयानन्द सन् 1860 में उनके पास पहुंचे और लगभग 3 वर्ष तक उनके सान्निध्य में रहकर वेद-वेदांगों का अध्ययन किया। तीन वर्षों में यह अध्ययन पूरा हुआ। सन् 1863 में गुरु दक्षिणा के अवसर पर गुरु विरजानन्द ने उनसे संसार से अविद्या वा अज्ञान दूर कर सत्य आर्ष ज्ञान को प्रचारित कर अनार्ष ज्ञान को हटाने की प्रेरणा की। ऋषि दयानन्द ने अपने गुरु की इस प्रेरणा को स्वीकार कर उसे शिरोधार्य किया था और आजीवन इसका पालन किया। इसके बाद से ही उन्होंने धर्म प्रचार का कार्य आरम्भ कर दिया था। उन्होंने अपने प्रयत्नों से वेदों की खोज कर उन्हें प्राप्त किया, उनका गहन अध्ययन एवं परीक्षा की और उसके बाद अपने वेद विषयक सिद्धान्तों का निश्चय कर वह देश भर में सत्य वेदज्ञान के प्रचार के कार्य में संलग्न हो गये। वेद प्रचार ही वह कार्य है जिससे देश देशान्तर में अविद्या को दूर किया जा सकता है। ऋषि दयानन्द को वेद प्रचार का कार्य करते हुए सफलता मिलनी आरम्भ हो गई थी। इसका एक उदाहरण 16 नवम्बर, सन् 1869 को विद्या की नगरी काशी में उनका लगभग 30 सनातनी विद्वानों से मूर्तिपूजा की वेदमूलकता पर शास्त्रार्थ हुआ जिसमें उन्हें सफलता मिली। इससे उन्हें पूरे विश्व में यश प्राप्त हुआ था।

ऋषि दयानन्द का जन्म ऋषियों की भूमि भारत में हुआ था। उनका कर्त्तव्य था कि वह प्रथम भारत में विद्यमान अविद्या, अन्धविश्वास, पाखण्ड एवं सामाजिक विषमताओं को दूर करें। उन्होंने इस कार्य को अपनी पूरी योग्यता व क्षमता से किया। इसका अनुकूल प्रभाव हुआ जो आज भी दृष्टिगोचर हो रहा है। भारत की पराधीनता समाप्त हुई। ऋषि दयानन्द के सिद्धान्तों व धर्मप्रचार एवं शास्त्रार्थ आदि नीतियों को न मानने का परिणाम

(शेष पृष्ठ 5 पर)

सम्पादकीय

अमर बलिदानी-पं. लेखराम आर्य मुसाफिर

6 मार्च को अमर बलिदानी पं. लेखराम जी आर्य मुसाफिर का शहीदी दिवस है। आर्य समाज को इस बात का सौभाग्य प्राप्त है कि हिन्दुओं में दूसरी किसी धार्मिक संस्था ने अपने धर्म की रक्षा के लिए इतने शहीद पैदा नहीं किए जितने आर्य समाज ने किये। पं. लेखराम जी भी अपने धर्म के लिए मर मिटने वाले वीर थे। उन्होंने अपने बलिदान से आर्य समाज को एक नई प्रेरणा दी। पं. लेखराम जी का स्मरण कर उनके प्रति श्रद्धा और आदर से मस्तक झुक जाता है। वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए उनकी अनवरत, अटूट श्रद्धा और पौराणिक, मुस्लिम और ईसाई मतों के आक्रमण का प्रबल प्रतिरोध ही उनके जीवन का उद्देश्य था। अपने इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए वे जीवन भर संघर्ष करते रहे और अन्त में वैदिक धर्म की रक्षा के लिए अपना जीवन बलिदान कर गए।

पं. लेखराम जी का जन्म जेहलम जिले के एक ग्राम सैदपुर में हुआ था। बाल्याकाल में पं. लेखराम का अध्ययन फारसी एवं उर्दू के माध्यम से हुआ। सामान्य शिक्षण प्राप्त करने के पश्चात वे सत्रह वर्ष की आयु में पुलिस में भर्ती हो गए। इस विभाग में उन्नति करते-करते वे सार्जेंट के पद तक पहुंच गए। पुलिस की सेवा करते-करते पं. लेखराम जी को आर्य समाज का प्रकाश मिला। इससे वे इतने प्रभावित हुए कि सरकारी सेवा को लात मार कर आर्य समाज के प्रचारक बन गए। उर्दू और फारसी का ज्ञान तो था ही परन्तु इन्होंने हिन्दी और संस्कृत का ज्ञान प्राप्त करने के लिए अभ्यास शुरू कर दिया।

तत्पश्चात वैदिक ग्रन्थों के गम्भीर स्वाध्याय ने आपकी योग्यता को चार चांद लगाए। पं. लेखराम ने कुरानशरीफ का अध्ययन तो तन्मयता से किया था किन्तु बाईबल तथा अन्य मतावलम्बी सिद्धान्त ग्रन्थों का भी तुलनात्मक अध्ययन किया। उस अध्ययन के निष्कर्ष को जन साधारण तक पहुंचाने के लिए उसे लेखबद्ध किया और उन सब लेखों और पुस्तकों का संग्रह करके पुस्तकाकार में छपवा कर उस पुस्तक का नाम कुलियात आर्य मुसाफिर रखा जो उस अमर शहीद की योग्यता तथा अनुभव का प्रतीक है।

पं. लेखराम जी महर्षि दयानन्द के अनुयायी थे। महर्षि दयानन्द के सिद्धान्तों का प्रचार-प्रसार करने के लिए उन्होंने रात-दिन एक किया। अपने जीवन की, अपने परिवार की परवाह न करते हुए जहां पर भी, जिस समय भी उनकी आवश्यकता महसूस की गई तुरन्त सभी कार्यों को छोड़कर वहां पहुंचना उनकी धर्म के प्रति अपार निष्ठा को दिखाता है। जिस जाति में, जिस धर्म में ऐसे धर्मनिष्ठ और वीर पुरूष होते हैं वही धर्म व जाति उन्नति करता है। आर्य समाज का यह सौभाग्य था कि उसे पं. लेखराम जैसा धुन का धनी व्यक्ति मिला।

महर्षि दयानन्द जी ने जिन उद्देश्यों की पूर्ति के लिए आर्य समाज की स्थापना की थी, उन्हें पूरा करने के लिए पं. लेखराम जी ने अपने आपको पूर्ण रूप से समर्पित कर दिया। पुलिस विभाग की नौकरी को छोड़ कर अपना सम्पूर्ण जीवन वैदिक धर्म के प्रचार प्रसार के लिए समर्पित कर दिया। अपने जीवन के अन्तिम क्षणों में उन्होंने आर्यों को प्रेरणा देते हुए कहा कि आर्य समाज में तहरीर और तकरीर का काम बन्द नहीं होना चाहिए।

पं. लेखराम जी एक निर्भीक प्रचारक थे। उन्हें बार-बार चेतावनी दी गई कि जिस विचारधारा का वह प्रचार कर रहा है उसे बन्द करें नहीं तो इसकी बहुत अधिक सजा मिलेगी। पं. लेखराम पर इसका कोई प्रभाव नहीं हुआ। वह अपना काम करते गए और एक दिन वह भी आया जब एक मतान्ध मुसलमान के द्वारा धोखे से हत्या कर दी गई। अपने बलिदान से पहले उन्होंने एक वसीयत की थी कि आर्य समाज से साहित्य निर्माण का कार्य बन्द नहीं होना चाहिए और इसमें सन्देह नहीं कि आर्य समाज में साहित्य का निर्माण तो होता रहा परन्तु उस साहित्य का जो प्रचार-प्रसार होना चाहिए था, उस कार्य में आज हम पीछे रह गए हैं।

साहित्य तभी लाभकारी हो सकता है जब उसे कोई पढ़ने वाला होगा। इसलिए महत्वपूर्ण कार्य प्रचार का है। आज अगर आवश्यकता है तो उस साहित्य, वैदिक सिद्धान्तों के प्रचार प्रसार की। अगर आज हम आर्य समाज का प्रचार करना चाहते हैं तो हमें अपने सामने एक लक्ष्य प्रस्तुत करना होगा। बिना लक्ष्य और उद्देश्य के कोई भी कार्य पूर्ण नहीं होता।

सम्पूर्ण आर्य जगत् के लिए धुन के धनी पं. लेखराम जी का बलिदान दिवस एक प्रेरणा दिवस है। पं. लेखराम ने अपने जीवन में आर्य समाज की उन्नति के लिए जो कार्य किए थे उन कार्यों से हम सभी भली-भांति परिचित हैं। परन्तु केवल इतने से ही हमारा कर्त्तव्य पूरा नहीं हो जाएगा। शहीदों के जीवन से शिक्षा लेकर हम किस प्रकार समाज एवं राष्ट्र की उन्नति के लिए अपना योगदान दे सकते हैं, इस पर विचार करना है।

शहीदों का जीवन हमें एक ही शिक्षा देता है कि जब एक व्यक्ति अपने सामने एक लक्ष्य रख लेता है तो उसका यह भी कर्त्तव्य हो जाता है कि उस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए समर्पण एवं त्याग की भावना से कार्य करें। धर्मवीर पं. लेखराम की तरह बलिदान भी देना पड़े तो वह भी दें। पं. लेखराम जी ने अपने सम्पूर्ण जीवन में यही किया था। वे अपने सुखों को त्याग कर हमेशा धर्म के मार्ग पर चलते रहे।

6 मार्च को पं. लेखराम जी के शहीदी दिवस पर हम आर्य समाज की उन्नति और तरक्की के लिए शपथ लें। अन्तिम समय में पं. लेखराम ने जो उपदेश दिया था कि आर्य समाज से तहरीर और तकरीर का कार्य बन्द नहीं होना चाहिए, उस उपदेश पर अमल करते हुए आर्य समाज की चतुर्दिक उन्नति के लिए कार्य करें।

वैदिक साहित्य को जन-जन तक पहुँचाकर महर्षि दयानन्द एवं वेदों की विचारधारा का प्रचार करें। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब इसी उद्देश्य से वैदिक साहित्य वेदों के सैट, सत्यार्थ प्रकाश, महर्षि दयानन्द चरित एवं अन्य पुस्तकें पंजाब की आर्य समाजों एवं स्वाध्याय प्रेमी सज्जनों को आधे मूल्य पर उपलब्ध करवाती है।

पंजाब के अतिरिक्त अन्य प्रान्तों से भी लोग वैदिक साहित्य लेने सभा कार्यालय में आते हैं। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने जिन उद्देश्यों के लिए आर्य समाज की स्थापना की थी, जिन उद्देश्यों की पूर्ति के लिए पं. लेखराम ने अपना बलिदान दिया था। उन महापुरूषों के बलिदान और कार्यों को व्यर्थ न जाने दें। आर्य समाज एक ऐसे वृक्ष के समान है जिसे अनेक बलिदानियों ने अपने बलिदान से तथा अनेक महापुरूषों ने अपनी प्रेरणाओं से सींचा है। आज हमारा यह कर्त्तव्य बनता है कि हम भी कुछ ऐसे कार्य करें कि आने वाली पीढीयां हमें भी याद करें। पं. लेखराम के बलिदान दिवस से प्रेरणा लेकर यदि हम आर्य समाज की उन्नति के लिए कार्य कर सकें तो यही उन्हें हमारी श्रद्धाजंलि होगी।

प्रेम भारद्वाज

संपादक एवं सभा महामन्त्री

अनेक रोगों की जड़-कब्ज़ तथा उसका प्राकृतिक उपचार

ले.-डॉ. विनोद पंकज निवास: 236, सैक्टर 11, पंचकूला

(गतांक से आगे)

1. मिट्टी की पट्टी से कब्ज़ का उपचार

राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी जी ने आजीवन मिट्टी की पट्टी से उपचार किया। उनके शब्दों में, ''खेत की साफ या काली मिट्टी लेकर और उसमें आवश्यक मात्रा में पानी डालकर साफ, पतले, गीले कपड़े में उसे लपेटा और पेट पर रखकर उस पर पट्टी बांध दी। यह पुल्टिस रात को सोते समय मैं बांधता था और सवेरे अथवा रात में जब जाग जाता तो उसे खोल दिया करता था। इससे मेरा कब्ज़ रोग जाता रहा। उसके बाद मिट्टी के ये उपचार मैंने अपने अनेक साथियों पर किए और मुझे याद है कि वे शायद ही कभी निष्फल रहे हों।''

निम्नलिखित फल, सब्जियों, मेवों इत्यादि के खाने से हम कब्ज़ रोग का स्वयं उपचार कर सकते हैं।

1. अंकुरित अन्न

गेहूँ, चना, मूंग, मेथीदाना, मोठ तथा कतिपय अन्य साबुत अनाजों को अंकुरित करके उसका प्रयोग करें। याद रहे कि अंकुरित अन्न की मात्रा एक छोटी मुट्ठी (a small gandful of sporuts) हो, उसे एक कटोरे में डालें। उसमें चुकंदर, खीरा, गाजर, प्याज, मूली, टमाटर, ककड़ी-खीरा इत्यादि काटकर डालें। नींबू निचोड़ कर, अपनी पसंद का स्वादिष्ट थोड़ा सा मसाला व काला नमक या सेंधा नमक मिलाकर अच्छी तरह चबाकर सुबह नाश्ता इसी अंकुरित अन्न से करें। अंकुरित अन्न में फल, भीगे मेवे इत्यादि भी डाल सकते हैं। इन्हें नाश्ते में लेना बेहतर होता है। दोपहर को लेने से पाचन में थोड़ी कठिनाई और रात्रि को अंकुरित खाने से पेट में गैस बनती है। इसे रात्रि में न खाएं।

2. हरी सब्जियां

सभी हरी सब्जियां, परवल, टिंडा, पत्ता गोभी, शलगम, घीया (लौकी), पेठा कद्दू, चुकन्दर, गाजर, खीरा, ककड़ी, पालक, टमाटर और विशेषकर मूली (पत्तों सहित) कोमल पत्तों के साथ पकाकर उबाल कर प्रयोग की जा सकती हैं। ध्यान रहे अन्न कम खाएं। ये सब्जियां पेट के सभी रोगों में हितकर व कब्ज़ नाशक हैं।

3. फल

पके हुए फल विशेषकर नाशपाती, सेब, केले, पपीता, सभी प्रकार के पीले फल व सिटरस फ्रूट (मौसमी, संतरा, माल्टा, नींबू, मीठा) इत्यादि फल भी कब्ज़ रोगों में अत्यन्त हितकर हैं।

4. सूप, रस, द्रव्य पदार्थ

फलों का रस (फाईबर सहित), सब्जी का सूप, नींबू का पानी, मट्ठा, दही, नारियल पानी का नियमित प्रयोग करने से भी कोष्ठबद्धता (कब्ज़) से राहत मिलती है।

5. खजूर, अंजीर, किशमिश, मुनक्का, छुआरा

इन सभी मेवों को भिगोकर या उबालकर अच्छी तरह चबाकर खाना चाहिए। खजूर-छुआरा को (दो या तीन) दूध में उबाल कर ले सकते हैं। 3 अंजीर, किशमिश के दाने रात्रि को अलग-अलग भिगोएं। सुबह अच्छी तरह चबाकर खाएं।

6. अन्य उपाय

(क) त्रिफला एक चम्मच जल के साथ (एक चम्मच शहद भी मिला सकते हैं)। रात्रि सोने से पूर्व हल्के गर्म जल के साथ।

(ख) आवंला चूर्ण 5 ग्राम, सनाय की पत्तियों का चूर्ण 5 ग्राम, हरड़ का चूर्ण 3 ग्राम, गुलाब की पत्तियां 4 ग्राम, पानी में उबालकर काढ़ा बनाएं। इसे प्रात: और सायं इच्छा अनुसार शक्कर या गुड़ मिलाकर कुछ दिन लेने से कब्ज़ दूर होती है।

7. ये उपाय भी आजमा सकते हैं

(क) 200 ग्राम गाजर अच्छी तरह चबा चबा कर नित्य दूध में उबालकर या कच्ची भूखे पेट कुछ दिन खाने से भूख अच्छी लगती है और कब्ज़ भी दूर होती है।

(ख) दस काली मिर्च पीसकर दो चम्मच देशी घी मिलाकर तीन दिन तक दिन में दो बार लें। फिर चौथे दिन गर्म दूध में दो चम्मच देशी घी (यदि गाय के दूध से निकला देशी घी) मिलाकर रात्रि सोने से पहले पीने से कब्ज़ दूर हो जाती है। यह प्रक्रिया एक दो सप्ताह भी जारी रख सकते हैं। हाँ, ध्यान रखें, यदि दस्त ज्यादा ढीला हो तो इसे रोक दें। (उपचार बन्द कर दें) कब्ज़ में चलाई की सब्जी खाएं। इसी प्रकार बथुआ उबाल कर उसका पानी छान कर स्वादानुसार शक्कर मिलाकर एक गिलास सुबह-शाम पीएं।

8. जल

पानी की उचित मात्रा अर्थात् दो-तीन लीटर पानी 24 घंटे में अवश्य पीएं। प्रात: उठते ही दो-तीन गिलास पानी (निवाया गर्म) नींबू व शहद मिलाकर लें। प्रयास करें कि भोजन के एक दो घण्टे बाद गरम-गरम पानी पीएं। जिन्हें लगातार कब्ज़ रहती है उन्हें भोजन के साथ एक-एक घूंट कोसा पानी अवश्य पीना चाहिए।

दही की छाछ बनाकर उसमें अजयावन का चूर्ण मिलाकर पीएं। दिन में ही छाछ लेना बेहतर होता है। दही खट्टा नहीं होना चाहिए। छाछ में शक्कर मिलाकर लेने से दही या छाछ अधिक पाचक हो जाता है।

नींबू का रस निवाए गर्म पानी में थोड़ी शक्कर या एक दो चम्मच शहद मिलाकर भी लेने से कब्ज़ से छुटकारा मिलता है।

अन्त में एक श्रेष्ठ सुझाव भी देना चाहूंगा। सब से बढ़िया कब्ज़ का उपचार प्राकृतिक चिकित्सा से बहुत आसान, बिना किसी दुष्प्रभाव व बहुत कम खर्च से हो सकता है। नि:संकोच प्राकृतिक चिकित्सा विशेषज्ञों की सेवा लें। कब्ज़ तथा अन्य रोगों का उपचार करवा कर शान्त, स्वस्थ, निरोगी जीवन जीएं।

स्वर्ण जयन्ती वार्षिक पारितोषिक वितरण समारोह की धूम

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब (रजि) जालंधर के तत्वावधान व आर्य विद्या परिषद पंजाब के दिशा निर्देश में, आर्य सी. सै. स्कूल धूरी में 50वें वार्षिक पुरस्कार वितरण समारोह ने खूब धूम मचाई। पुरस्कारों की जगमगाहट ने बच्चों व उनके अभिवावकों के चेहरे रौशन कर दिए।

आर्य सी. सै. स्कूल के प्रधान रिटा. प्रिं. आर पी शर्मा जी के नेतृत्त्व में, शहर के प्रमुख स्कूलों के प्रिंसिपलों ने समारोह में शिरकत की। प्रसिद्ध उद्योगपतियों, समाज सेवा और मीडिया, न्यूज चैनलों के प्रतिनिधियों ने कार्यक्रम की रौनक को चार गुणा कर दिया। आर्य कालेज महाशाय चेतराम टैक्नीकल कालेज का विशेष योगदान रहा। स्टूडैंटस ने मंच पर अपनी कला के जौहर दिखाये। पढ़ाई के अलावा खेल, मनोरंजन व अन्य क्षेत्रों में भी पुरस्कार, यादगारी मोमैंटो स्मृति चिन्ह दिये गये।

पढ़ाई में बच्चों का उत्साह बढ़ाने के लिए मैनेजमैंट की ओर से गर्म रजाईयां भी बांटी गई। प्रिं. मैडम नीरू जिंदल द्वारा स्कूल की प्रगति रिपोर्ट पढ़कर सुनाई गई। एडवोकेट विकास शर्मा ने समारोह को कामयाब करने के लिये काफी मेहनत की। श्री प्रहलाद कुमार, पवन कुमार, सतीशपाल, वीरेन्द्र, श्री सुशील पाठक, डां. रविन्द्र शर्मा, डा. सरीन, राजीव मोहिल, वासुदेव व रामपाल आर्य ने पूर्ण सहयोग किया। प्रिं. आर पी शर्मा (प्रधान मैनेजिंग कमेटी) ने बताया कि शिक्षा के क्षेत्र में नई नई उपलब्धियां प्रस्तुत करना ही आर्य समाज की शिक्षण संस्थाओं का मुख्य उद्देश्य व ध्येय है। उन्होंने आगे कहा कि आईये हमारी आर्य संस्था ज्वाईन करें। फीस नहीं दे सकते तो भी कोई बात नहीं। उन्होंने कहा कि आर्य स्कूल को बुलंदियों पर पहुँचाना ही उनकी मंजिल है। श्री श्याम आर्य ने कहा कि आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के उद्देश्यपूर्ण हेतु वेद प्रचार के कार्य को युद्ध स्तर पर आगे बढ़ाया जाना हमारी योजना का वंशीभूत मन्त्र है। स्त्री आर्य समाज की प्रधाना बहन कृष्णादेवी ने कहा कि आदेशानुसार पृथक सत्संग प्रारम्भ किया जा चुका है और स्त्रियों की ओर से शिक्षा अभियान को और भी आगे बढ़ाया जायेगा। डा. शशि सरीन, संतोष कुमारी, रमा बांसल आदि ने समारोह में विशेष योगदान डाला। एडवोकेट विकास शर्मा जी के प्रयासों से 20 से ज्यादा मान्यवर वकीलों ने समारोह की रौनक बढ़ाई। नगरपालिका धूरी के E.O. तथा प्रधान श्री सतीश कुमार गर्ग व संदीप पायल ने आर पी शर्मा जी के साथ विद्या की ज्योति प्रचण्ड की। अग्रवाल सभा के प्रधान श्री सुरेश बांसल ने आर्य संस्थाओं की स्पष्टवादिता पर संतोष प्रकट किया। शहर के प्रमुख उद्योगपति श्री मक्खन लाल गोयल ने मुख्य मेहमान का पद संभाला। आर्य सी. सै. स्कूल के इस समारोह ने शहर में भी एक नई जागरूकता पैदा कर दी।

पृष्ठ 2 का शेष-''शिवरात्रि पर मूलशंकर को बोध...

ही देश का विभाजन था। ईश्वर, जीवात्मा और संसार का सत्यस्वरूप आज हमारे सामने है। हम ईश्वर की उपासना विधि सहित वायु एवं जल आदि की शुद्धि सहित मनुष्य को रोगों से दूर रखने तथा रोगी को स्वस्थ करने का उपाय अग्निहोत्र यज्ञ को भी जानते व करते हैं। हम यह भी जान पायें है कि हमारे रोगों का कारण हमारी अनियमित दिनचर्या सहित अनयिमित भोजन एवं वायु, जल एवं पर्यावरण की अशुद्धि व प्रदूषण होता है। शिक्षा व विद्या का महत्व भी देशवासियों ने समझा और आज भारत विद्या के क्षेत्र में विश्व के अग्रणी देशों में है। ऋषि दयानन्द ने शुद्ध भूमि में परम्परागत देशी खाद व उत्तम नस्ल के बीजों से उत्पन्न खाद्यान्न को मनुष्य के लिए हितकर व स्वास्थवर्धक बताया था। वर्तमान में इस बात की भी पुष्टि हो रही है। ऋषि दयानन्द ने स्वास्थ्य का आधार ब्रह्मचर्य को बताया था यह भी अब सभी स्वीकार करने लगे हैं। ब्रह्मचर्य का सेवन छूट जाने को ही उन्होंने देश व समाज के पतन का प्रमुख कारण भी बताया था। इसे भी विद्वानों ने ज्ञान के स्तर पर सत्य सिद्ध किया है। ऋषि दयानन्द ने मांसाहार, अण्डा, मछली, मदिरा को निन्दित भोजन बताया था। आज हमारे चिकित्सक हृदय व मधुमेह आदि अनेक रोगों में इन पदार्थों का सेवन न करने की सलाह देते हैं। धार्मिक दृष्टि से भी इन पदार्थों का सेवन अत्यन्त निन्दनीय होने सहित आयु ह्रास का कारण है। इससे परजन्म में भी अतीव हानि होती है।

ऋषि दयानन्द ने महाभारत युद्ध के बाद मध्यकाल में सनातन वैदिक धर्म में प्रविष्ट मूर्तिपूजा व जड़पूजा, अवतारवाद, मृतक श्राद्ध, फलित ज्योतिष, सामाजिक असमानता व भेदभाव आदि का भी खण्डन व विरोध किया था। उन्होंने अपने ग्रन्थों में इनके सम्बन्ध में विस्तार से प्रकाश डाला है। आज तक किसी मत-मतान्तर का विद्वान व आचार्य ऋषि दयानन्द द्वारा खण्डित इन मान्यताओं व विचारों को वेदानुकूल अथवा मनुष्य जाति के लिए हितकर व लाभप्रद सिद्ध नहीं कर सका। ऋषि दयानन्द ने सत्य के प्रचार के लिये सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका, ऋग्वेद-यजुर्वेद भाष्य, संस्कारविधि, आर्याभिविनय आदि अनेक महत्वपूर्ण ग्रन्थों का प्रणयन किया।

उन्होंने वेदों का अध्ययन करने के लिये संस्कृत के अनेक व्याकरण ग्रन्थों की रचना भी की। अपने समय में ऋषि दयानन्द ने अपनी मान्यताओं के समर्थन में विपक्षी विद्वानों से शास्त्रार्थ, वार्तालाप व शंका समाधान आदि भी किये। उनके अनुयायी विद्वानों ने उनके खोजपूर्ण अनेक विस्तृत जीवन चरित्र लिखे। यह सब ऋषि दयानन्द को संसार का महानतम पुरुष सिद्ध करते हैं जो ऋण ईश्वर विश्वासी हैं, अद्भुद ज्ञानी हैं, तपस्वी व पुरुषार्थी हैं, तर्क शक्ति से सम्पन्न हैं, किसी भी विवादित विषय पर चर्चा करने पर अपराजेय हैं, एक साधारण नाई की सूखी रोटी स्वीकार कर उसे भी प्रेम से खाते हैं तथा विश्व बन्धुत्व का प्रचार करने सहित सभी मनुष्यों को परमात्मा की सन्तान बताते हैं। ऋषि दयानन्द ने अपने उपदेशों व ग्रन्थों के द्वारा जिस सत्य सनातन तर्क-सिद्ध व सर्वहितकारी वैदिक धर्म का प्रचार किया वही धर्म एवं संस्कृति विश्व के प्रत्येक मनुष्य का वस्तुतः सत्य व यथार्थ धर्म व संस्कृति है। संसार को इसको अपनाना ही होगा। अन्य कोई सत्य धर्म व जीवन शैली वैदिक जीवन के समान हो ही नहीं सकती। ऋषि दयानन्द ने शुद्ध हृदय एवं भावनाओं से संसार से अविद्या दूर करने के लिये सत्य सनातन सिद्धान्तों पर आधारित जिस वैदिक मत का प्रचार किया उसमें वह सफल हुए हैं। वैचारिक धरातल पर ऋषि दयानन्द के अधिकांश विचारों को पूरे विश्व में स्वीकृति मिल चुकी है। कोई इनको चुनौती नहीं देता। मूर्तिपूजा तथा फलित ज्योतिष आदि ऋषि के मन्तव्यों को भी आने वाले समय में स्वीकृति अवश्यमेव मिलेगी। इसी के साथ इस लेख को विराम देते हैं।

स्त्री आर्य समाज मॉडल टाऊन जालन्धर का माघ मास का गायत्री महायज्ञ सम्पन्न

स्त्री आर्य समाज मॉडल टाऊन जालन्धर में माघ महीने में चलने वाला गायत्री महायज्ञ दिनांक 13 फरवरी 2020 वीरवार को पूर्णाहुति के साथ सम्पन्न हुआ। 14 जनवरी 2020 मकर संक्रान्ति से प्रारम्भ होकर यह गायत्री महायज्ञ बड़े उत्साह और हर्षोल्लास के साथ एक महीने चला और इस महायज्ञ में बहनों तथा भाईयों ने श्रद्धापूर्वक भाग लिया। प्रतिदिन कॉफी संख्या में लोगों ने यजमान बनकर उत्साह के साथ कार्यक्रम में भाग लिया। 2 फरवरी को स्व. पं. हरबंस लाल शर्मा जी के जन्मदिवस पर उनकी पुत्रवधुओं श्रीमती गुलशन शर्मा, श्रीमती ज्योति शर्मा, श्रीमती रीटा शर्मा तथा उनके बच्चों ने यजमान बनकर यज्ञ किया और विद्वानों का आशीर्वाद प्राप्त किया। लगातार एक महीने तक बाहर से आए विद्वानों के प्रवचन होते रहे। इस वर्ष 14 से 24 जनवरी तक स्वामी विष्वङ्ग जी, 24 जनवरी से 2 फरवरी तक आचार्य सोमदेव जी तथा 3 फरवरी से 13 फरवरी तक महात्मा चैतन्यमुनि जी एवं माता सत्याप्रिया जी के प्रवचन होते रहे। स्वामी विष्वङ्ग जी ने पंचमहायज्ञों में प्रथम ब्रह्मयज्ञ पर विस्तार से प्रकाश ड़ाला। उन्होंने सभी को संध्या करने की प्रेरणा दी। आचार्य सोमदेव जी ने गायत्री महामन्त्र की महिमा का वर्णन किया और कहा कि हमें प्रतिदिन कुछ समय निकाल कर गायत्री का जाप करना चाहिए। गायत्री का जाप करने से हमें आत्मिक शक्ति प्राप्त होती है।

महात्मा चैतन्यमुनि जी ने अपने प्रवचनों में यज्ञ की महिमा का वर्णन किया। उन्होंने कहा कि यज्ञ संसार का सर्वश्रेष्ठ कर्म है। हम जिस-जिस कामना के साथ यज्ञ करते हैं, वे सभी पूर्ण होते हैं। उन्होंने लोगों की यज्ञ सम्बन्धी शंकाओं का समाधान किया। यह सम्पूर्ण कार्यक्रम स्त्री आर्य समाज की कर्मठ प्रधाना श्रीमती सुशीला भगत जी की अध्यक्षता में चलता रहा जिसमें सभी बहनों ने अपना तन-मन और धन से पूर्ण सहयोग प्रदान किया। श्रीमती सुशीला भगत प्रतिवर्ष नये परिवारों को स्त्री आर्य समाज के साथ जोड़ने का प्रयास करती हैं। प्रतिवर्ष नये-नये परिवार स्त्री आर्य समाज के साथ जुड़ते हैं और पूरी आस्था के साथ यज्ञ करते हैं।

दिनांक 13 फरवरी 2020 वीरवार को माघ मास में चलने वाले इस गायत्री महायज्ञ की पूर्णाहुति 31 हवनकुण्ड़ों पर की गई। पूरा महीना हवन यज्ञ में जिन्होंने यजमान बनकर आहुतियां डाली थीं, आज उन्होंने अपने परिवार सहित पूर्णाहुति ड़ालकर यज्ञ सम्पन्न किया। निरन्तर एक महीने तक चलने वाले इस यज्ञ में 200 से ज्यादा परिवारों ने यजमान पद को ग्रहण किया। पूर्णाहुति के अवसर पर श्रीमती सुशीला भगत, संगीता भगत, नीरू कपूर, श्रीमती रजनी सेठी मुख्य यजमान बनें। गायत्री महायज्ञ के ब्रह्मा पं. सत्यप्रकाश शास्त्री जी थे। पं. बुद्धदेव एवं पं. आनन्द प्रकाश ने मन्त्रोच्चारण किया। यज्ञ के पश्चात यज्ञब्रह्मा पं. सत्यप्रकाश शास्त्री, महात्मा चैतन्यमुनि जी, माता सत्याप्रिया जी एवं सभी विद्वानों यजमान परिवारों को सामूहिक रूप से जलाभिषेक के द्वारा आशीर्वाद प्रदान किया।

पूर्णाहुति के पश्चात मुख्य कार्यक्रम आर्य समाज के सत्संग हाल में शुरू हुआ। कार्यक्रम का शुभारम्भ करते हुए माता सत्याप्रिया यति जी एवं पं. बुद्धदेव वेदालंकार ने यज्ञ की महिमा एवं प्रभु भक्ति के मधुर भजन गाकर ईश्वर की महिमा का गुणगान किया। महात्मा चैतन्यमुनि जी महाराज ने सभी को यज्ञ करने की प्रेरणा दी। श्रीमती नीरू कपूर जी संयुक्त मन्त्राणी स्त्री आर्य समाज ने स्त्री आर्य समाज मॉडल टाऊन जालन्धर की वार्षिक रिपोर्ट पढ़कर सुनाई जिससे लोग बहुत प्रभावित हुए और स्त्री आर्य समाज के द्वारा किए जाए रहे समाजसेवा के कार्यों की भूरि-भूरि प्रशंसा की। श्रीमती नीरू कपूर ने बहुत ही सुन्दर ढंग से मंच का संचालन किया। इस अवसर पर स्त्री आर्य समाज की ओर से गणमान्य अतिथियों को बुके और महर्षि दयानन्द का चित्र देकर सम्मानित किया। स्त्री आर्य समाज मॉडल टाऊन की प्रधाना श्रीमती सुशीला भगत जी ने महात्मा चैतन्यमुनि, माता सत्यप्रिया तथा आए हुए सभी गणमान्य अतिथियों का धन्यवाद करते हुए कहा कि आप सभी के सहयोग से इस वर्ष का यह गायत्री महायज्ञ सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ है। उन्होंने कहा कि हर वर्ष हमारा प्रयास रहता है कि नये-नये लोगों को आर्य समाज के साथ जोड़ा जा सके। लोगों में गायत्री का जाप एवं यज्ञ के प्रति रूचि पैदा हो। इस कार्य के लिए मेरी स्त्री समाज की सभी बहनें अपना भरपूर सहयोग देती हैं। इनके सहयोग से ही स्त्री आर्य समाज की गतिविधियां निरन्तर बढ़ रही हैं। अनेक संस्थाओं एवं गुरूकुलों को आर्थिक सहयोग दिया जाता है, जरूरतमन्द लोगों की सहायता की जाती है। आप सभी बहनों के सहयोग से ही स्त्री आर्य समाज की गिनती भारतवर्ष की सर्वश्रेष्ठ स्त्री आर्य समाजों में की जाती है। मैं आप सभी बहनों का एवं सभी अतिथियों का हार्दिक धन्यवाद करती हूँ। इस अवसर पर आर्य समाज के प्रधान श्री अरविन्द घई, प्रिं. विनोद कुमार चुघ, प्रिं. आतिमा शर्मा, रश्मि घई, श्रीमती गुलशन शर्मा, सुनीता मिड्ढा, अजय महाजन, ऊषा महाजन, नीरू कपूर, श्रुति कपूर, सुदेश भंडारी, जोगिन्द्र भंडारी, संगीता भगत, रोमिला आर्य, सरिता विज, मोना सूद, सोनिया विज, मुनीश खन्ना, रितिका खन्ना, यामिया खन्ना, विभा आर्य एवं अन्य मौजूद थे।

-नीरू कपूर संयुक्त मन्त्राणी स्त्री आर्य समाज मॉडल टाऊन जालन्धर

मूलशंकर से दयानन्द सरस्वती यात्रा

ले.-डा. सुशील वर्मा, गली मास्टर मूलचन्द वर्मा फाजिल्का-152123

उद्बुध्यस्वाग्ने-36 श्रद्धा से उठ! क्यों उठे? प्रतिजागृहि जगाओ। किसे जगाओ? अग्नि को, चेतन अग्नि को। वह कौन सी चेतन अग्नि है? वह आत्मा है, जो बुद्धि से सम्बन्धित है। ज्ञान से सम्बन्धित है। प्रश्न फिर वही कि उसे क्यों जगाएँ? उद्देश्यपूर्ति के लिए। कौन सा उद्देश्य? उद्देश्य है अन्धकार का नाश। यह कैसे हो पाएगा? अग्नि ही आत्मा के चेतन हो जाने पर पाप रूपी अथवा अज्ञानरूपी कृष्ण धूम भागता हुआ दृष्टिगोचर होता है। यज्ञ तो है ही अन्धकार दूर करने के लिए। अन्धकार चाहे कोई भी हो। यह शारीरिक, मानसिक व अध्यात्मिक हो सकता है। आधिभौतिक एवं आधिदैविक भी। आधिभौतिक जगत में 'आत्मा' इन्द्र है। साधक जब उद्बुध्यस्वाग्ने पुकारता है तो आत्मा जागृत हो जाती है और आत्माग्नि प्रज्ज्वलित हो उठती है। और जब आत्मा जागृत हो जाए तो शेष रह ही क्या गया।

ऐसी ही आत्मा का जागरण छोटे से बालक मूलशंकर में हुआ। इस नन्हें से बालक का उपनयन संस्कार आठवें वर्ष में हो चुका था। क्योंकि पिता जी औदीच्च ब्राह्मण थे इसलिए गायत्री, सन्ध्या के साथ साथ यजुर्वेद, वेदों के कुछ अंश आदि कण्ठस्थ करवा दिए गए थे। इस सस्कारित बालक में आत्मा का जागरण उस समय हुआ जब उसने पिता की आज्ञानुसार शिवरात्रि का व्रत रख लिया। उस समय इस बालक की आयु 14 वर्ष की थी। चूहों द्वारा शिवपिण्डी पर उछल कूद का नजारा देख शिव महात्मय का विशाल भाव धराशयी हो गया। मूर्ति पूजा की आस्था यहीं से विध्वंस हो गई। क्योंकि बालक को पिता ने शिवरात्रि का महत्त्व एवं महात्म्य बताया था। इसीलिए शिव दर्शन की लालसा के कारण वह बालक देर रात तक जागता रहा और वह शिव पिण्डी पर चूहों का दृश्य उसे बार बार झंकोरता रहा कि क्या यही शिव है? दुनिया जिसे महादेव कहती है। जो अपनी रक्षा स्वयं नहीं कर सकता वह संसार की कैसे रक्षा कर पाएगा? परिणाम यह हुआ कि जीवन भर के लिए इस पूजा पद्धति से हमेशा के लिए नाता तोड़ लिया। फिर बड़े से बड़े प्रलोभन, भय और आपत्ति भी उसका सिर मूर्ति के समक्ष न झुका सकी। क्योंकि आत्माग्नि प्रज्ज्वलित हो चुकी थी।

उस घटना के पश्चात् सोलहवें वर्ष में बहिन की मृत्यु, 19वें वर्ष में चाचा का देहान्त। परिणाम वैराग्य अग्नि ने अपना प्रचण्ड रूप धारण कर लिया। वैराग्य ग्रस्त बालक ईष्ट मित्रों से प्रभु दर्शन, मोक्ष प्राप्ति और मृत्युञ्जय बनने के उपाय पूछता रहा। आखिरकार घर का त्याग कर दिया। पिता के अनथक प्रयास उसे रोक नहीं पाए और अन्ततः नैष्ठिक ब्रह्मचारी की दीक्षा प्राप्त कर शुद्ध चैतन्य नाम पाया। सन 1847 ई. में स्वामी पूर्णानन्द सरस्वती से सन्यास दीक्षा लेकर दयानन्द संरस्वती नाम धराया। मूलशंकर से दयानन्द सरस्वती नाम पाने तक कितना प्रभाव था उस शिवरात्रि का, जिसे आज हम बोध रात्रि के नाम से जानते है। परमपिता परमात्मा जब किसी का विशेष उद्देश्य के लिए चयन करता है तो उस की अनुकम्पा, स्पष्ट दिखाई देती है यही समय तो उसे 'उद्बुध्यस्वाग्ने' का आदेश दे रहा था। फिर वह आत्मा जागृत हो उठती है जैसा कि कठोपनिषद् इस प्रक्रिया को उद्धत करती है।

नायमात्मा प्रवचनेन लभ्यो न मेधया न बहुना श्रुतेन।

यमैवैष वृणुते तेन लभ्यस्तस्यैष आत्मा विवृणुते तनूꣳस्वाय।।

अर्थात् जिसको वह वर लेता है वही इसे प्राप्त कर सकता है। उसके सामने आत्मा अपने स्वरूप को खोल कर रख लेता है।

उस आत्मा की तृप्ति के लिए, सच्चे शिव की तलाश में न जाने कहाँ कहाँ भटकता रहा। दुर्गम से दुर्गम स्थानों का भ्रमण करता रहा। पाखण्डियों एवं धूर्त लोगों से प्रताड़ित होता रहा। अन्ततोगत्वा 1855 में दयानन्द अपने दीक्षा प्रदान करने वाले गुरु से विद्याध्ययन की इच्छा प्रकट की। उनका उत्तर था कि मथुरा जाओ और गुरु विरजानन्द से शिक्षा ग्रहण करो। तुम्हारा मनोरथ पूरा करेगें। **(क्रमशः)**

पृष्ठ 8 का शेष-आर्य समाज वेद मंदिर...

शास्त्री जी ने ऋषि दयानन्द जी महाराज के जीवन पर बहुत ही सारगर्भित विचार रखे। सुरिन्द्र आर्य व राजेश अमर प्रेमी जी ने भी बहुत ही सुन्दर भजन प्रस्तुत किये। राजेश अमर प्रेमी जी ने "भगवान आर्यों को पहली लगन लगा दे" भजन गाकर सभी लोगों का मन मोह लिया। डा. महावीर मुमुक्षु जी ने महर्षि दयानन्द जी महाराज के जीवन व कार्यों पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के वरिष्ठ उप प्रधान श्री सरदारी लाल जी, श्री अशोक परूथी जी ऐडवोकेट (रजिस्ट्रार आर्य विद्या परिषद पंजाब), श्री सुधीर शर्मा (कोषाध्यक्ष आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब), श्री सुशील रिन्कु जी MLA जालन्धर, श्री मोहिन्दर भगत उप प्रधान भाजपा पंजाब, श्री बचन लाल जी पार्षद, श्री तरसेम सिंह लखोत्रा पार्षद, श्री राजीव टिक्का पार्षद जी ने भी अपने अपने विचार ऋषि चरणों में रखे। बाद में इन सभी विशेष अतिथियों का आर्य समाज के अधिकारियों द्वारा शाल, पुष्प माला व ओ३म पटकों द्वारा स्वागत किया गया। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा जी ने अपने सम्बोधन में प्रदूषण दूर करने हेतु यज्ञ के महत्व पर बल दिया। उन्होंने कहा कि जल-वायु और वृक्ष वनस्पति ये पर्यावरण के घटक तत्व हैं और ये प्रत्येक लोक में जीवनी शक्ति के लिए अनिवार्य हैं, यदि ये नहीं होंगे तो मानव का जीवित रहना सम्भव नहीं है। इन तत्वों के प्रदूषण या विनाशन से पर्यावरण प्रदूषण होता है। आज विश्वभर में भूमि, जलवायु आदि सबको अत्यधिक मात्रा में प्रदूषित किया जा रहा है। यांत्रिक उपकरण इस समस्या को और बढ़ा रहे हैं। जीवनी शक्ति प्राणतत्व या आक्सीजन के एकमात्र स्रोत वृक्ष वनस्पतियों को निर्दयतापूर्वक काटा जा रहा है। यदि वृक्ष नहीं होंगे तो मनुष्य को ऑक्सीजन नहीं मिल पाएगा और वह जीवित नहीं रह सकेगा। वैदिक ऋषियों ने पर्यावरण प्रदूषण को रोकने के लिए जलवायु और वृक्ष वनस्पतियों को प्रमुख साधन बताया है। इस कार्यक्रम में जालन्धर की सभी आर्य समाजों ने बढ़ चढ़ कर भाग लिया। ठीक दो बजे शान्तिपाठ के बाद एक विशाल नगर कीर्तन आर्य समाज मन्दिर से आरम्भ हुआ। लोगों ने सारे मार्ग पर भव्य स्वागत किया। सारे नगर का चक्कर लगा कर आर्य समाज मन्दिर में समाप्त हुआ जहां पर एक विशाल ऋषि लंगर का आयोजन किया गया। इस नगर कीर्तन में आर्य समाज वेद मन्दिर बस्ती बावा खेल, आर्य समाज वेद मन्दिर दानिशमंदा, आर्य समाज वेद मन्दिर आर्य नगर, आर्य समाज वेद मन्दिर गान्धीनगर-1, आर्य समाज वेद मन्दिर गान्धी नगर-2, आर्य समाज कबीर नगर, आर्य समाज मन्दिर चौक टाहली, आर्य समाज गढ़ा, वेद मन्दिर ढन मुल्ला जालन्धर, आर्य समाज कपूरथला ने बढ़चढ़ कर भाग लिया। इस सारे उत्सव को सफल बनाने में श्री पं. मनोहर लाल जी, श्री रमेश कुमार जी, मन्त्री राजकुमार जी, बिशम्भर लाल जी, कोषाध्यक्ष सुदेश रत्न, जगदीश भगत, सोम नाथ, लाभ चन्द जी, सुशील कुमार शीला, मक्खन, अरूण रत्न, वशिष्ट, पं. शशि कान्त, मोनु, राकेश पीलु, माता सत्या देवी, कान्ता देवी, शीला देवी, श्रीमति सुनीता, श्रीमति प्रवेश व अन्य सभी अधिकारियों ने दिन रात कड़ी मेहनत की। इस अवसर पर भार्गव नगर बाजार का नामकरण भी महर्षि दयानन्द के नाम पर किया गया।

कमल किशोर
प्रधान आर्य समाज वेद मन्दिर भार्गव नगर जालन्धर

पृष्ठ 8 का शेष-आर्य समाज तलवाड़ाटाऊनशिप का...

करनी चाहिए, क्योंकि मनुष्य जैसी संगत करता है, वैसा ही बन जाता है। इनके बाद पंजाब सभा के ही महोपदेशक पं. श्री विजय कुमार शास्त्री जी ने अपने प्रवचन में कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने संसार का उपकार करने के लिए आर्य समाज की स्थापना की। कार्यक्रम के आरम्भ में इसी सभा के भजनोपदेशक श्री सतीश सुमन जी एवं सुभाष राही जी जग में वेदों की बासुरियाँ बजाई ऋषि ने बहुत ही मनोहर भजन सुनाकर लोगों का मार्गदर्शन किया। इनके बाद सभा के ही भजनोपदेशक श्री अरूण विद्यालंकार जी ने अपने भजनों के माध्यम से आर्य समाज एवं दयानन्द का गुणगान किया। इसके बाद अध्यक्षीय भाषण में श्री प्रेम भारद्वाज जी ने आर्य समाज के कार्यों की विस्तार से चर्चा की और कहा कि माँस मनुष्य का भोजन नहीं है। आज जो चीन में कोरोना वाइरस फैला है। इसका उपाय है कि हम अपने घर में हवन करें। अगर हम सुख चाहते है तो हमें महर्षि दयानन्द के बताए हुए वेद मार्ग पर चलना पड़ेगा। सभा के ही मन्त्री श्री सुदेश आर्य जी ने अपने विचारों में कहा कि स्वामी दयानन्द सरस्वती में राष्ट्रवाद की भावना कूट-कूट कर भरी हुई थी। वे भारत को आजाद देखना चाहते थे। उन्हीं के प्रयत्नों से अनेक आर्यों ने अपना बलिदान दिया। कांग्रेस का इतिहास लिखने वाले पट्टाधि सीता रमैया ने लिखा है कि भारत को आजाद करवाने में 85 प्रतिशत आर्यो का योगदान है। आखिर में आर्य समाज के प्रधान श्री हरीश चावला जी ने सभी का धन्यवाद किया। इस कार्यक्रम में समाज के पुरोहित पं. परमानन्द आर्य, माता कृष्णा देवी, प्रिसिंपल अर्चना कुल श्रेष्ठा जी, बेबी देवी जी, गिरधारी लाल शर्मा जी, मंगेश चन्द्र, वन्दना देवी, पिंकी, नरेन्द्र राजपाल सुखदेव, रविन्दर, रेवान् मनस्वी अखिलेश दिवाकर आदि अनेक महानुभावों भाग लिया। आखिर में अटूट ऋषि लंगर का आयोजन किया गया।

-कोषाध्यक्ष अरूण कुमार

ऋषि दयानंद बोध पर्व पर 24 घण्टे अखण्ड गायत्री महायज्ञ का आयोजन

आर्य समाज दाल बाजार लुधियाना में ऋषि दयानंद बोध पर्व के उपलक्ष्य में 24 घण्टे अखण्ड गायत्री महायज्ञ का आयोजन 20 फरवरी दिन वीरवार प्रात: 9 बजे से 21 फरवरी दिन शुक्रवार प्रात: 9 बजे तक लगातार चला और पूर्णाहुति के पश्चात् 12:30 बजे तक भजन और उपदेश हुए।

अखण्ड गायत्री महायज्ञ से पहले 19 फरवरी दिन बुधवार प्रात: 6: 30 बजे विशाल प्रभातफेरी का आयोजन किया जो आर्य समाज फील्ड गंज से चलकर बाला गंभीर जी के घर पहुंची। रास्ते में प्रभात फेरी में संजीव चड्ढा जी, सुरेंद्र टण्डन जी, अनिल कुमार जी, सुभाष अबरोल जी भजन गाते हुए चल रहे थे। बाला गंभीर जी के घर प्रभात फेरी का स्वागत पूरे परिवार द्वारा किया फिर बाला जी के घर पर संगत द्वारा भजन प्रस्तुत किये गए। प्रभात फेरी का सफल आयोजन किरण टण्डन, शशि आहूजा, हर्ष आर्य, राजेन्द्र शास्त्री, सुरेश चड्ढा, राजेन्द्र बत्रा जी का पूरा सहयोग रहा।

20 फरवरी दिन वीरवार प्रात: 9 बजे अखण्ड गायत्री महायज्ञ का आयोजन हुआ। जिसमें आर्य समाज दाल बाजार के शास्त्री बृजेश जी द्वारा संध्या के पश्चात् गायत्री महामंत्र का पाठ शुरू किया गया। लुधियाना वासियों द्वारा विभिन्न आर्य समाजों के आर्यों द्वारा, दाल बाजार के व्यापारियों द्वारा गायत्री महायज्ञ में यजमान बनने का और आहुति देने का जोश सर चढ़ कर बोल रहा था।

सहारनपुर से मुख्य रूप से पधारे प्रसिद्ध भजनोपदेशक सुखपाल आर्य जी और समराला से मुख्य रूप से पधारे राजेन्द्र शास्त्री जी ने सुंदर सुंदर भजन प्रस्तुत किये। पुरोहित सभा लुधियाना के प्रधान बालकृष्ण शास्त्री जी महामंत्री योगराज शास्त्री जी और उनकी टीम का गायत्री महायज्ञ सम्पन्न करवाने में पूरा सहयोग रहा। 24 घण्टे लगातार गायत्री महायज्ञ में विभिन्न आर्य समाजों के पुरोहित सुरेन्द्र शास्त्री जी की अगुवाई में लगातार मंत्र उच्चारण कर रहे थे। अखण्ड गायत्री महायज्ञ में 24 घण्टे लगातार जलपान ऋषि लंगर चलता रहा। जिसमें पूरा बाजार, आर्य परिवारों श्रद्धा से ऋषि लंगर ग्रहण करते रहे।

प्रोग्राम में मुख्य रूप से लुधियाना नगर निगर के डिप्टी मेयर श्याम सुंदर मल्होत्रा, पार्षद यशपाल चौधरी पहुंचे और बताया कि राष्ट्र में पनप रही बुराइयों को और राष्ट्र विरोधी ताकतों के खिलाफ आर्य समाज को खुलकर आगे आना चाहिए। अंत में आर्य समाज दाल बाजार के प्रधान संत कुमार आर्य जी द्वारा लुधियाना की सभी आर्य समाजों से पधारे आर्यजनों का धन्यवाद किया गया और महामंत्री सुरेन्द्र टण्डन जी ने बताया कि गंभीर वायरसों से बचने के लिए इस तरह के यज्ञ राष्ट्र के लिए बहुत जरूरी है। प्रोग्राम को सफल बनाने में स्त्री आर्य समाज दाल बाजार की प्रधाना किरण टण्डन, मंत्री जनक माता, कोषाध्यक्ष बाला गंभीर, किरण कपूर और उनकी टीम रेणु वधवा, शशि आहूजा, सुलक्षणा सूद, बाला चोपड़ा, संयोगिता महाजन, रीटा अबरोल, सोनिया शर्मा सविता शर्मा, सुनीता पाहवा, कमलेश पाहवा, परवीन सरोज महाजन, अंजू चड्ढा, सीमा चड्ढा, सरोज, रेणु टण्डन, सन्तोष, सभी बहनों का, संजीव चड्ढा, राजेन्द्र बत्रा, वीरेन्द्र शर्मा, ब्रजिन्द्र भंडारी रमाकांत महाजन, सतपाल नारंग, शशिकांत त्रिपाठी, परवीन पाहवा, अनिल पाहवा, चरनजीत पाहवा, राजेश मरवाहा, दाल बाजार एसोसिएशन अशोक वैध, पुष्प खुल्लर, के के पासी, सुरेश चड्ढा, कपिल नारंग, सतबीर, अजय सूद, सुशील महाजन, अरुण सूद, गगन वर्मा, अनिल आर्य, आत्म प्रकाश सिद्धान्त अबरोल, अरुण कालड़ा, अर्पण पाहवा, गौरव पाहवा, गौरव उप्पल, नीलम थापर, इंद्रा होडा, राजेश शर्मा, रणबीर शर्मा, सतीश गुप्ता, कर्मवीर गुलाटी, सुरेश गंभीर, सत्यवती पूनम वासन, रजनी गंभीर, चन्द्र गंभीर, भरत मस्ताना, वेद प्रिय चावला और सभी आर्य समाजों के आर्यजनों के आर्यो का और आर्य समाज के सेवक बंटी के परिवार का भरपूर सहयोग रहा।

-संत कुमार प्रधान आर्य समाज

आर्य समाज नवांकोट अमृतसर में ऋषिबोधोत्सव

आर्य समाज नवांकोट अमृतसर में ऋषिबोधोत्सव (महाशिवरात्री) माता जगदीश आर्य जी प्रधाना आर्य महिला सभा अमृतसर की अध्यक्षता में 16-2-2020 को बड़ी श्रद्धा व धूमधाम से मनाया गया। जिसमें सर्वप्रथम यज्ञ के ब्रह्मा पं. बनारसी दास आर्य ने सन्ध्या हवन सम्पन्न करवाया। यज्ञ के यजमान श्री आंशू जी, श्री विजय आनन्द जी तथा श्री कीमती लाल जी परिवार सहित सम्मिलित हो कर यज्ञ में आहुतियां डाली। बाबू लाल महाजन, कमला महाजन के परिवार से फल प्राप्त हुए जो यज्ञ के पश्चात् वितरित किये गये। लक्षमण कुमार तिवारी जी, गायत्री सन्ध्या तथा कुमारी शिवानी आर्य ने अपने भजनों से सब का मन मोह लिया। श्री ओम प्रकाश सोनी जी मन्त्री पंजाब सरकार, बाबू सरदारी लाल आर्यरत्न, श्री अशोक परूथी जी एडवोकेट, माता जगदीश रानी आर्या, तथा सामाजिक कार्यकर्ता श्रीमती स्वराज ग्रोवर का फूलों से स्वागत किया। श्री ओम प्रकाश सोनी ने कहा कि स्वामी दयानन्द जी ने समाज सुधार का बहुत बड़ा कार्य किया। शिक्षा के क्षेत्र में क्रांति पैदा कर दी। बाबू सरदारी लाल आर्यरत्न ने कहा कि ऋषि दयानन्द के बताए मार्ग पर चलो तथा अपने बच्चों को मोबाईल फोन जैसी बीमारी से बचाओ। श्री अशोक परूथी जी ने कहा कि घरों में यज्ञ करो ताकि कोरोना जैसी खतरनाक बीमारी को दूर रखा जा सके। सामाजिक कार्यकर्त्ता स्वराज ग्रोवर ने लड़कियों को शिक्षित करने पर बल दिया। कार्यक्रम की अध्यक्षा माता जगदीश आर्या ने कहा कि वेद से बढ़ कर कुछ भी नहीं। वेद की शिक्षा को अपनाओ तथा अपने घर को स्वर्ग बनाओ। श्री इन्द्रपाल आर्य ने देश प्रेम का भजन गाकर सब को आनन्दित कर दिया। पं. बनारसी दास आर्य ने आये हुए सभी विशेष अतिथियों का धन्यवाद किया। भिन्न-भिन्न आर्य समाजों से आये सदस्यों तथा योग समितियों का धन्यवाद किया। शान्ति पाठ के पश्चात् ऋषि लंगर वितरित किया गया।

पं. बनारसी दास आर्य

ऋषि बोधोत्सव

दिनांक 23-02-2020 रविवार आर्य समाज मन्दिर कमालपुर होशियारपुर में ऋषि बोधोत्सव बड़े ही उत्साह और उल्लास के साथ मनाया गया। इस अवसर पर एक विशेष हवन यज्ञ में श्री कुलदीप आहलुवालिया सपत्नी यज्ञमान बने। नगर से पधारे आर्यजनों ने बढ़ चढ़ कर आहुतियां डाली। श्री जीवन कुमार शास्त्री ने यज्ञ सम्पन्न करवाया।

तत्पश्चात् भजनों के माध्यम से श्रीमती चोपड़ा, दुर्गेश नंदिनी, और उपासना बहल ने ऋषि दयानन्द के भजन गा कर मन्त्र मुग्ध कर दिया। सचिव यश वालिया ने महर्षि दयानन्द सरस्वती को नमन करते हुआ कहा कि शिवरात्रि वाले दिन ऋषि ऐसे जगे कि वे फिर सो नहीं पाये, स्वयं जगे और दूसरों को जगाते रहे। देश में फैले पाखण्डों और कुरीतियों का विरोध किया, कोई भय नहीं और न ही संगठन था, अत: 1875 ई. में आर्य समाज की स्थापना की। उपाध्याय श्री शिव प्रसाद शास्त्री ने अपने मुख्य प्रवचन में कहा कि आज के दिन भी जागने की बहुत जरूरत है, युवा पीढ़ी के लोग संस्कार विहीन हो रहे हैं, उन्हें जगाना है, बचाना है। जन्म जात जातिवाद और छूतछात की भयंकर बीमारी को जड़ से उखाड़ना होगा। तभी देव दयानन्द का सपना साकार होगा। अन्त में उन्होंने कहा कि ऋषि के संदेश ''वेद की ओर लौटो'' और ''यज्ञ करो'' को जन-जन तक पहुँचाना होगा। अंत में शांति पाठ के पश्चात् ऋषि प्रसाद बांटा गया।

-के. सी. शर्मा सहमन्त्री

आर्य समाज वेद मन्दिर भार्गव नगर जालन्धर में ऋषिबोधोत्सव पर भव्य ऋषि मेला

आर्य समाज वेद मन्दिर महर्षि दयानन्द बाजार भार्गव नगर जालन्धर में ऋषि बोधोत्सव के अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा जी को सम्मानित करते हुये आर्य समाज वेद मंदिर भार्गव नगर के संरक्षक एवं सभा के वरिष्ठ उपप्रधान श्री सरदारी लाल जी आर्य। उनके साथ खडे हैं श्री राज कुमार जी, श्री पंडित मनोहर लाल जी, एवं आर्य समाज के प्रधान श्री कमल किशोर जी। चित्र दो में विधायक श्री सुशील कुमार रिन्कू को सम्मानित करते हुये आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा जी। उनके साथ खड़े हैं सभा उप प्रधान श्री सरदारी लाल जी, पंडित मनोहर लाल जी, श्री विशम्भर दास जी, सभा मंत्री श्री सुदेश कुमार जी एवं श्री राज कुमार जी। चित्र तीन में जालन्धर की आर्य समाजों से पधारे अधिकारी गण एवं अन्य। चित्र चार में शोभा यात्रा का दृश्य।

आर्य समाज वेद मन्दिर महर्षि दयानन्द बाजार भार्गव नगर जालन्धर में ऋषि बोधोत्सव पर भव्य ऋषि मेले का आयोजन किया गया। इस उपलक्ष्य में 14 फरवरी से 17 फरवरी तक लगातार प्रभात फेरियों का क्रम चलता रहा। 17 फरवरी से 22 फरवरी 2020 तक सायं 7.00 बजे से 10.00 तक पवित्र वेद कथा का आयोजन किया गया। पं. राजेश अमर प्रेमी जी के मधुर भजन व डा. महावीर मुमुक्षु जी द्वारा आत्मा-परमात्मा व मन की विभिन्न अवस्थाओं पर बहुत ही सुन्दर व मार्मिक वेद प्रवचन होते रहे। भारी संख्या में श्रोताओं ने इस वेद कथा में बढ़-चढ़ कर भाग लिया। प्रतिदिन ऋषि लंगर का आयोजन होता रहा।

23 फरवरी को मुख्य उत्सव का शुभारम्भ हवन यज्ञ से किया गया। यज्ञ के ब्रह्मा पं. सुरेश जी शास्त्री (महोपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब) ने यज्ञ का कार्य बड़े ही सुन्दर ढंग से सम्पन्न करवाया। इस अवसर पर श्री बलवीर भगत जी, हरिप्रकाश जी, निर्मल जी व सुरिन्द्र आर्य जी, ऋषि भगत, जयचन्द जी, ओ३म प्रकाश जी, सोमनाथ जी, श्री जगदीश भगत जी ने परिवार सहित उपस्थित होकर बहुत ही श्रद्धावान यजमान रूप में यज्ञ सम्पन्न कराया। तत्पश्चात् डा. महावीर मुमुक्षु जी के कर कमलों द्वारा भव्य ओ३म ध्वज लहरा कर ध्वजारोहण का कार्य किया गया। गुरूकुल करतारपुर के ब्रह्मचारियों द्वारा "जयति ओ३म ध्वज" ध्वजगीत प्रस्तुत किया गया। इसके बाद प्रात: राश लेकर ऋषिबोध सम्मेलन का आरम्भ किया गया। जिसकी अध्यक्षता आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा जी ने की। माता सत्यादेवी, कान्ता देवी व शीला देवी की भजन मण्डली ने "आजा इक वार योगीया पै गईयाँ फेर लोड़ां तेरियाँ" भजन प्रस्तुत किया। पं. सुरेश (शेष पृष्ठ 6 पर)

आर्य समाज तलवाड़ाटाऊनशिप का वार्षिक महोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज तलवाडा टाउनशिप में बोधोत्सव बड़ी धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के महामंत्री श्री प्रेम भारद्वाज जी एवं सभा मंत्री श्री सुदेश कुमार जी विशेष रूप से पधारे। इस मौके पर आर्य समाज के सदस्य सभामहामंत्री श्री प्रेम भारद्वाज जी एवं सभा मंत्री श्री सुदेश कुमार जी को सम्मानित करते हुये। चित्र दो में तलवाडा पहुंचने पर उनका स्वागत करते हुये आर्य समाज के सदस्य एवं अधिकारीगण।

दिनांक 14 फरवरी से लेकर 16 फरवरी 2020 तक आर्य समाज तलवाडा का वार्षिक उत्सव बड़ी ही धूमधाम एवं उत्साह के साथ मनाया गया। जिसमें प्रात:काल हवन यज्ञ किया गया जिसमें मुख्य रूप से एस. एल. सेठी एवं उनकी धर्मपत्नी ने यजमान पद को सुशोभित किया। यज्ञ के बाद सभी को हल्वे का प्रसाद वितरित किया गया। तत्पश्चात् सभी ने मिलकर नाश्ता किया। उसके बाद साढ़े दस बजे अगला कार्यक्रम सत्संग भवन में शुरू हुआ। इसमें मुख्य अतिथि के रूप में आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के महामन्त्री श्री प्रेम भारद्वाज जी एवं मन्त्री श्री सुदेश आर्य जी ने विशेष रूप से भाग लिया। कार्यक्रम उनकी अध्यक्षता में शुरू किया गया। इस कार्यक्रम में आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के माननीय वैदिक प्रवक्ता आचार्य नारायण सिंह ने अपने प्रवचन में कहा कि हमें भूल करके भी बुरी संगत नहीं (शेष पृष्ठ 6 पर)

स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की तरफ से मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक प्रेम भारद्वाज द्वारा गायत्री प्रिंटिंग प्रैस, मण्डी रोड जालन्धर पंजाब से मुद्रित एवं गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से प्रकाशित।
सम्पादक-प्रेम भारद्वाज
पीआरबी एक्ट के तहत प्रकाशित सामग्री के चयन हेतु उत्तरदायी किसी विवाद का न्यायिक क्षेत्र जालन्धर होगा। आर एन आई संख्या 26281/74 E-mail: apspunjab2010@gmail.com, www.aryapratinidhisabha.org